

रसिक शिरमोर (१९६)

साई साहिब झूलना प्रेम के हिण्डोल
दिव्य आनंद में सदा फूलना रसिक शिर मोर॥

आई प्रेम की बदरिया नाचे मन मोर
चले पवन पुनीत करे झक झोर
खिले आशा के फूल चारों ओर॥

रस कथा के हिण्डोल की है अजब बहार
भरी नैननि खुमारी झूले साई सुकुमार
उठें लहरियां उमंग नहीं जाने निश भोर॥

हरी हरी लता पता हरा वृन्दावन
हरी आनंद की बेलि हरा प्रेम का चमन
लखि चंद्र वदन भए नयनवा चकोर॥

युगल बिहारी झूलें साई जू की गोद
मैया वाधाई देत भरे मन मोद
जै जै धुनि करे घटा घन घोर॥